[illegible]

16 SEP 1974

निजी पुस्तकालय

श्रीगणेशायनमः ॥

श्री जानकीप्राणवल्लभायनमः ।

अष्टयाम पूजाविधि ॥

सुतीक्ष्णउवाच ।

हृदयेमानसी पूजाकीदृशीवावदप्रभो ।
चारैकतिवि पूज्यतेरघुनन्दनम् १

अगस्त्यउवाच ।

रामंपद्मपलाशाक्षं नीलांबुदसमप्र
॥ स्मितवक्त्रंसुखासीनंचिंतयेत्

चिन्तितंसुरैः॥ २॥ रागादिकलुखंचि
वैराग्येणसुनिर्मलम् ॥ कृत्वाध्याये
सदारामंभवबंधविमुक्तये ॥ ३ ॥ प्रा
शुद्धतनुर्भूत्वा शौचादिभिरतन्द्रित
विविक्तदेशमाश्रित्य ध्यानंपूजांस
रभेत् ॥ ४ ॥ एवंयःकुरुतेपूजांवहिर्वा
येपिवा ॥ सकृतपूजामात्रेणरामभ
भवेन्नरः ॥ ५ ॥

चञ्चरीक छन्द ॥

बरणोंबाह्यान्तर सियरघुबर सेवकाई। सीय
पल पल कृत कोटिन मुख बरणत नित कथि
सकहिं शारद बिधि शिव श्रुति अहिराई ।

ज मति हित बिलाश पिय तहँरौ जियै आस
तक ज्यों आनन्द एकस्वाति बुँदपाई। याम
क उठि सवार शुद्धकरै भूतद्धार बैठिके एकांत
ममंत्र पढ़ै भाई ॥ भावनाति निज शृंगारकरै
वध मध्यसारसीयराम सेवा तन बचन मन
गाई ॥ लक्षदल सुरंग कंज मणिमय मन
त रंग तापर त्रैमंडल बिचपलँग सुखसदाई।
वत तहँ सीयरामसोये महल परम धाम राम-
रण सुरति सखि ठाढ़ि ह्वै जगाई ॥ ६ ॥

॥ श्लोक ॥

उष्यतांकृपयादेवरामचन्द्रदयानिधे।
श्वेशंविश्वकर्ताच विश्वम्भरविश्व
लकः ॥ ७ ॥

चञ्चरीक छन्द ॥

जागु जागु जागु श्याम जानकीबिहारी
कुंदमाल तीतमाल कमल केतकी गुलाब बि
शृँगारबन बिचित्र बन निहारी ॥ बोलहिं स
मयूर कोकिला मराल कीर गुंजहिं आलि स
राम जनक की दुलारी । शारदा सुभद्रा भद्रा
सुधामुखी प्रभावती रागादि सखि गावहिं
हारी ॥ निर्मला सुगन्धा सखी प्रेमशीला मृत
मज्जनसुखहेतु लिहेदिव्यपात्रझारी । धात्रीच
स्मिता धरास्मृतादि धीरा सखी लिहे दंतधा
प्रभु मन प्रसन्नकारी ॥उज्जला प्रहंसी हँसीच
चन्द्रकला बिद्युलतादिक सखी मुख पोछन
धारी । कर्पूरांगी च माधीविहि च कुंकुमांगी

प्रीतिदादि लेपन तन लिहे सुगन्धचारी ॥ चित्रा
कांचनी चित्ररेखा चन्द्रावतीय बिमलादिक लिहे
बसन अंग अंग न्यारी । चावांगी हेमा रमनी-
या कुशलादि चारुरूपा सखी भूषण लिहे सुदे-
श भारी ॥ रामा कमलादि चित्रगंधा लाली
ललितालालजू सुगन्ध लिहे धूपकीतय्यारी । तव
तोरति छितिनी सखी दीपानूपादि लिहे दीप
दब्य रामचन्द्रजागिकै निहारी ॥ माधुजीशांता
न्तोषा सुखदा मधुशालिनी सखी लिहे स्वाद
भारुझारी।प्रेमदा आनन्दा छेमापाना कामदादि
सखी लिये पान सुगन्ध बिबिधि डारी ॥ शुभगा
स्वनी मोहनी मान्या राधादिक सखी लिहे
आरती सुगन्ध रतनथारी । अनुगा भावा महो-

रहा चपला सखी वरारोहादिक लिहे बिबि
बाजन स्वरझारी ॥ अमला कमलाक्षी पुष्पां
विशदाक्षि सुदंसकादि सखी लिहे फूलमालला
कमलर्नी अनन्ता कल्यानी रक्तांगी कृपाव
दिक सखी कृपाल चमरढारी ॥ सलिलाउव
मानदारसोत्सवादि सखिप्रेमालय करणाव
छत्र ब्यजनकारी । उचित बिबिधि साज स
लीन्हे सखि कोरिन शिव शेष आदि गाव
यश जागुलाल प्यारी ॥ जागे करुणा निध
निज निज कृत सखि सुजान रामचरण दम्प
पर तन मन सखिवारी ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

शुद्धेनमनसारामं पूजयत्सततंह

आवाहयामिविश्वेशं जानकीवल्लभं विभुम् ॥ ९ ॥ रघुनन्दनमेदेवश्रीरामाभिमुखोभव प्रसीदजानकीनाथसुप्रसीदसुरेवरश्वर ॥ १० ॥

सीता भूत उपमा छबि छई। तन श्याम गोरि जरावढिग अति पीत नील दुकूलई ॥ जनुनील-घन तर बाल रबि पर तड़ित चंचलताथई ॥ अलसान चष मूँदत खुलत भृकुटी कुटिल छबि भूलई। थिरकत भ्रमर भीतर उपर जनु भोर बारिज फूलई ॥ मुखपर हलत बेसरि बुलाक सुसखिन चित अनुकूलई। जनु मेघ रबि मधि चंद्र दुइ गुर तड़ित रज्जु पर झूलई ॥ सिय ओर रघुबर झुकहिं सिय पिय ओर सुख आलसकई॥

लटकहिं उनींदे बदनपर कछु अलक लट शोभा भई ॥ जनुबाल अहि शशि सुधारस पीवत उड़त झूलतलरी । कोइसखि सुधारहि बसन आलस निवारहि करधरी ॥ कोइकरणफूल सुधारि कोइसखि बदन चषपोंछतभई । गई नींदजानकी राम उतरे पलंग ते सखिभुजधई ॥ ११ ॥

॥ श्लोक ॥

गृहाणार्घंमयादत्तंकृष्णविष्णोजनार्दनः ॥ नमस्तेजानकीनाथ रामचन्द्र नमोस्तुते ॥ १२ ॥

हरिगीत छन्द ॥

दइ अरघ मंगल गान बरषत सुमन माण

चौकी दई । बैठाइ सीताराम कहँ सखि चरण परछालत भई ॥ १४ ॥

॥ श्लोक ॥

पाद्यंगृहाणराजर्षेनमोराजीवलोचन। परिपूर्णपरानन्द नमोरामायवेदसे १४ नमःसत्यायशुद्धाय विज्ञानज्ञानरूपिणे । गृहाणाचमनंनाथ सर्वलोकैक नायक ॥ १५ ॥

हरिगीत छन्द ॥

सखि कनक झारिन सरयु जल दै राम सिय मुख धोवहीं। पुनिदातुइनिदै राम सिय लै रुचिर

रुचि मन भोवहीं ॥ करैं दतुइनि रद छबि तड़ित
पवि कुंद दाड़िम लोवहीं । जल देहिं थँभि थँभि
पाइरुख सियराम मुख सब जोवहीं ॥ कोइ पढ़हिं
रामचरित्र कोइ सखिगान मधुर सुनावहीं । सखि
रामचरण द्विफाल दतुइनिनीरमुखअँगुछावहीं १६

॥ श्लोक ॥

मलयाचलसंभूतं शीतमानन्दवर्द्ध
नम् । काश्मीरवणसाराढ्यंचन्दनम्प्र
तिगृह्यतां ॥ १७ ॥ एवमादीनिसर्वाणिभूष
णानिनृपोत्तम ॥ अहंदास्यामिसद्भक्त्या
संगृहाणजनार्दन ॥ १८ ॥

सुगन्धा छन्द ॥

सखि मुख पानि अँगोछिकै भाल तिलकरची सीता जू के शीशफूल अद्भुतसची । कंचन मणिन जराव ताज शिर शमके ॥ मंगल भूषण कछु सजि श्यामा श्यामके ॥ कुण्डल अलक बुलाक बलय कंकन कर ॥ कंठा कौस्तुभगुंज पदिकमालाबर ॥ यज्ञोपवीत सुत्र कटि तट पट पीतजू ॥ मणि मुद्रिका गोड़हरा सब छबि जीत जू ॥ शीशफूल श्रुति बेसरि बनि ग्रीवाकली । पचलरी चम्पकली पदिकहारावली ॥ अंगद कंकन छला सुत्र कुछ पैंजनी । श्रीरामके भूषण मंगलमय मणी ॥ १९ ॥

॥ श्लोक ॥

बनस्पतिरसैर्दिव्यैर्गन्धाढ्यैसुमनो हरैः ॥ रामचन्द्रमहीपालधूपोयंप्रति गृह्यतां ॥ २० ॥

सुगंधा छंद ॥

कोइ सखि धूपसौंज साजि दिब्य सुगंधमई ॥ श्री रामायन महँपढ़ि धूपार्पण कई ॥ आँनंद युत सखि धूप सीयरामहिं दई ॥ दुइ सखि पुनि मुख पोंछत पट उज्जलललई ॥ २१ ॥

॥ श्लोक ॥

ज्योतिषांपतयेतुभ्यं नमोरामायवे-

धसे ॥ गृहाणदीपकंराजन् त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥ २२ ॥

सुगन्धा छन्द ॥

दुइ बाती को दीप अनूप सवांरिकै। सीय राम रुख पाइ कमल कर धारिकै ॥ कोइ सखि दीपक दिब्य करति चष जोइकै। नख शिख अंग अंग लखि रहि चन्द चकोरिकै ॥ कोइसखि दीपकमंत्र उचारहि गाइकै। माणिक दीपकलिहे दुइ सखि अति भाइकै ॥ करि दीपक सुख पोंछि ·म सिया मनलई । रामचरण सखि भोजन ·ल मैं दई ॥ २३ ॥

॥ श्लोक ॥

ॐ नमोबासुदेवाय तत्त्वज्ञानस्वरूपिणे ॥ गृहाणमधुपर्कंमेराजराजायते नमः ॥ २४ ॥

रूपचौपाई छंद ॥

मंगल मूरति सिय रघुराई। मंगल सखि मधुपर्क ले आई ॥ श्री सीता रामायसु पाई। युगल मंत्रकरि अर्पितभाई ॥ पावत सीयराममनभाई। मंगल भोजन अतिहि सुहाई ॥ दधि मिश्री मिश्रित रुचिदाई। अपरस्वाद रसआदि मँगाई। रस रस पावत सिय रघुराई। तस तस देहिं सखी मन भाई॥ पुनि दुइ सखि जलपान करा.

थँभि कछु चिने करि दूध पवाई ॥ पावत सखि रस गारी गाई । प्रीति राम सिय बरणि न जाई॥ दुइ सखि जल लै बदन धोवाई । कोइ कर मुख पोंछहि सुखदाई ॥ रामचरण सखि पान खवाई । मंगल आरति दिब्य बनाई ॥ २५ ॥

॥ श्लोक ॥

मंगलार्थमहीपालनीराजनमिदंहरे ॥
संगृहाणजगन्नाथरामचन्द्रनमोस्तुते ।

रूपसवैया छंद । मंगल आरती ॥

मंगल रामजानकी जोरी । मंगल आरति सखिन सजोरी ॥ मंगल थार रतन भरि पूरण बाती कपूर रचिबोरी । निरखहिं रूप श्याम

श्यामाको घन दामिनि उपमा अति थोरी ॥ बहु
सखि ताल मृदंग बजावहिं । बहु सखि मंगल
गान करोरी ॥ बहु सखि सुमन माल बरषत भई
रामचरण बहु नृत्य रचोरी ॥ २७ ॥

चंचरीकछन्द ॥

देखोसखि मंगलमय सीयराम जोरी । चौकी
मणि कनककोर तापर रघुबर किशोर बाम अङ्ग
जनकलली उपमा कहकोरी ॥ राम शिर जराव
ताज कुंचित छबि अलकराज मनहुँ मधुप अव
लि शशि सरोज मिलि झिलोरी । कुंडल अति
लोल गोलगंड सुमंडित कपोलमनहुँमयन
न हित बदन वाकहोरी ॥ तिलकभाल

मनहुँ मदनशर विशेष जनु मर्कत भृंग तड़ित चंचल थिरभोरी। कमल श्याम श्वेत लाल नयन श्रवण लगि बिशाल भृकुटी कुटिल नाशिका बुलाक मनहरोरी। मुखमयंक किरिणिहास रसिक चष चकोर बासभुज बिशाल धनुषबाण कामखल मरोरी। पदुमपदारक्त पत्र भ्रमर मन मुनीन्द्र यत्र तत्र ताजि अन्यत्र चित्तजाइ श्वान सोरी॥ नखशिख शोभा अनूप मंगलमयश्यामरूप ध्यान करत नामरटत राम निजकरोरी। सीयशीशफूल कनक मोतिउपर तनक तनक मनहुँ नाग नारि शिरमनिंद्र ध्रुवउयोरी॥ अति अनूप करणफूल जनुयुग राकेश कूल असुर सुरपुरोध आमियहेतु मतकरी। कमलनयन भौंह बंक ताबिच सिंदूर

अंकशशि हृद पर अहिशिशु बिचदीपजनुबरोरी॥
मुखपरवेसरि हलोस मनहुँअरुणकंज कोसतड़ित
अल्पसुत मयंक मंगर झगरोरी॥ दक्षिणकर नील-
कंज बामपाणि गेंद मंजु सारिनील कनककलित
मणि कनकलछोरी। शरद प्रात हंसगोरि मंगल
भूषणसजोरि मंगलमय जाहि नेकु सियजूचित-
योरी॥ ठाढ़ी सखि ओर पास लीन्हें चमर छत्र
खास ब्यजन धनुष बाण वेतथार बहु भरोरी॥
मंगलमय ध्यान येही शिव शुक सनकादि गही
रामचरण नाम रटत ध्यान यह धरोरी॥ २८॥

॥ श्लोक ॥

प्रातस्मरामिरघुनाथमुखारविंदंमन्द

स्मितंमृदुलभाषिविशालभालम्करणां
बलंविचलकुण्डलसोभिगण्डंकर्णांतदी-
र्घनयनंनयनाभिरामम् २९ प्रातर्नमामि
रघुनाथपदारविन्दं पद्मांकुशादिसुभ
लेषसुखावहंमे। योगीन्द्रमानसमधुव्रतसे
व्यमानंसपापहंसपदिगौतमधर्मपत्न्या।
३० ॥ प्रातर्भजामिरघुनाथकरारविन्दं
रक्षोगणायभयदंवरदंनिजेभ्यः॥ यद्राज
संसदिविभज्यमहेशचापं सीताकरग्र-
हणमङ्गलमापसद्यः ॥ ३१॥ प्रातस्मरे
श्रुतिनुतांरघुनाथमूर्त्तिं नीलांबुजोत्पल
सितेतररत्ननीलाम्र ॥आमुक्तमौक्तिक

विशेषविभूषणाढ्यं ध्येयंसमस्तमुनिभि
र्निजमृत्युहत्यै॥३२॥प्रातर्वदामिवचसा
रघुनाथनाम वाग्दोषहारिसकलंसमलं
निहंति॥यत्पार्वतीस्वपतिनासहभोक्तु
काम प्रीत्यासहस्रहरिनामसमंजजाप॥
३३॥ यःश्लोकपंचकमिदंमनुजः पठेत्
नित्यंप्रभातसमयेनियतःप्रबुद्ध्या॥श्री
रामकिंकरजनेषुसएवमुख्योभूत्वाप्रया-
तिहरिलोकमनन्यलभ्य ॥ ३४ ॥

॥ श्लोक ॥

जयतिजनकजायाःपादपद्मंमनोज्ञंहरि
हरविधिवंद्यंसाधकानांसुसेव्यम्॥नखर

निकरकांतमुद्रिकानूपुराद्यैः ॥ हरिहर हृदिमध्ये योगयोगीशभाव्यम् ॥ ३५ ॥ वन्देविदेहतनयापदपुंडरीकं कैशोर शौरभसमाहृतयोगिचित्तम् ।हंतुंत्रिताप मनिशंमुनिहंससेव्यं सन्मानशालिपरि पीतपरागपुञ्जम् ॥ ३६ ॥

सुगंधा छन्द ॥

मंगलआरति करिसखि राम रिझाइकै । भूषण कछुक उतारहिं प्रभु मन पाइकै ॥ कोइ सखि पटपहिरावहिं दूसर छोरिकै । अष्टकमलदल मणि चौकी दुइजोरिधै ॥ द्वौचौकी बसु बसु सखीटहल चतुरि बड़ी । अष्टकोणदल दल पर आयसु लखि

खड़ी ॥ बागीशा माधवी प्रिया हरिमन जीवा।
नित्या बिद्या सबिद्या कूटरूपा सीवा ॥ आठौ
मुख्य दिगन द्वौखड़ी सोरहसखी । अवरनिते लै
देहिं आठ कहँ मनलखी ॥ सियचौकी पर मुख्य
आठ सोरह सखी । जस रघुबर सेवा महँ तससिय
के लखी ॥ बिमला उतकर्षणी क्रियायोगा
प्रबी । ईशाना ज्ञाना सत्त्या सेवाकबी ॥ आठ
आठजे मुख्य करहिं मनकी लखी। समय समय
सबलिहे अपर कोटिन सखी ॥ परम मुख्य सखि
चाप सुशीला लछिमना । हेमा अतिशीला
सुचारुशीलामना ॥ पांचहुँकी आज्ञा सुसबै
सेवाशुचि । अर्घदेति सखि अग्रराम सिय की
रुचि ॥ ३७ ॥

॥ श्लोक ॥

गृहाणार्घंमयादत्तंकृष्णविष्णोजनार्दन। नमस्तेजानकीनाथरामचन्द्रनमोस्तुते ॥

सुगंधा छंद ॥

यक चौकी भयेठाढ़ राम यक जानकी। अन्हवावन की बिधि लिहे सखिय सयान की ॥ झारी भरी सरजू जलआयसु पाइकै। युगल मंत्र पढ़ि सखी मिलाय कई ॥ ३८ ॥

॥ श्लोक ॥

ब्रह्माण्डोदरमध्यस्थंतीर्थैश्चरघुनन्द

न ॥ स्नापियिष्याम्यहंभक्त्या संगृहाण जनार्दन ॥ ३९ ॥

सुगन्धा छन्द ॥

अन्हवावन लागीं सखिसीतारामको । सरयू अष्टक पढ़हिं करहिं धुनि नामको ॥ ४० ॥

॥ श्लोक ॥

जननिसरयुदेवित्वज्जलंब्रह्मलोका क्षितितलमुपनीतंब्रह्मपुत्रर्षभेन ॥विमल मतिवशिष्ठेनात्मनोयोगसिद्धौ ॥ रघुबर कुलवृद्धौरामगंगेप्रसीद ॥४१॥ त्वदभि शरणमात्राजंतवःसर्वएते सरयुजयजय तिध्यानवन्तःपठन्तः।परमपदमयीन्द्रैर·

र्थ्यमानंवरेण्यंभवतिविगतशोकादिव्य
देहंलभन्ते ॥ ४२॥ कैलासाश्रमवासिनो
भगवतः श्रीचन्द्रमौलेपुरा रिक्तंवीक्षक
पर्दिकंसुरगजैर्गाङ्गं जदाप्तंजलंतत्कालं
विधिपात्रतोमुनिवरैरानीयसंस्थापितं।
शम्भोः संनिहतेजलंतदमलंख्यातंसुरैः
सारवम् ४३ तद्वाशिष्ठिजलंत्वदीयममरैः
संप्रार्थितंनित्यसः ॥ श्रीरामेणमणीखि
णास्वनगरे संवीक्षतोयोजितम्॥ब्रह्मैकां
तनितान्तसंस्थितमतो पूज्यैवशिष्ठैर्थि
तान् ॥ पूज्येश्रीशिवसान्निधेरुपगतं
प्राप्तं पृथिव्यांपुनः ॥ ४४ ॥ भगवति

तवतीरे योध्यायां विध्यनीरे कुसमित करवीरे शुद्धिसौगंधिसीरे। यदि पतति यत्तरङ्गा स्तवत्तयःप्राप्तपूरे सभ्भवति विगतदोषे दिव्यरूपीशरीरे ॥४५॥ सकलकलुषहंत्री स्वर्गसोपानकर्त्री सुरपथमनुगंत्री ब्रह्महत्यादिहंत्री ॥ सकलसुखविधात्री सिद्धिदात्री नराणाम् जयतु जयतु देवी श्रीवशिष्ठस्य पुत्री ॥ ४६ ॥ वशिष्ठित्वत्तटांभःकरनमनुमितिमथात्मनोयोगसिद्धेः येमेजीवाऽस्पृशन्ति प्रतिदिनमभयंतत्क्षणाज्जांतिसिद्धिम्। भूलोकेनागलोके सुरपतिसदनेत्वत्क-

थाकीर्त्तनेन इनातप्रातप्रायांति प्रमित मितवचस्कोपिकैवल्यधामः ॥ ४७ ॥ त्वत्संगेनागभृंगी भवतिसुभवत्तनुकीर्तिमांसौ कृतांतेत्वत्पूरैःपूर्ण भाग्यो भवतिनरवरःकर्मकाण्डप्रसक्तः ॥ शृंगी भृंगी पतंगी यदि पततिजले कुंजरा इवशृगालाः सर्वे मुक्तात्मदेहाहरिपुर सदनेदिव्यदेहंलभन्ते॥ ४८ ॥ स्तोत्रमेतच्चगार्ग्योक्तंसरय्वाष्टकमद्भुतं॥ यःपठेत्प्रयतोनित्यंसर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ४९॥

सरयूअष्टक सुगन्धा छंद ॥

देहि नीर भरि भरि सखि कोइ अन्हवावहीं।

वेदसार कोइ पढ़हिं सुमंगल गावहीं ॥ ५० ॥

॥ श्लोक ॥

कुंकुमागुरुकस्तूरी कर्पूरान्मिश्र च न्दनम् ।तुभ्यंदास्यामिविश्वेशंश्रीरामा स्वीकुरुप्रभो ॥ ५१ ॥

सुगन्धा छन्द ॥

कंचन मणि कोपर सखि कमल करन धरे । राम सीय को मलत सुगंध बिबिधि भरे॥चन्दन केसर मृदमद अगर कपूर दई । लेपन करहिंराम सिय तन मन रुचिलई ।अंग अंग सखि मींजहिं पुनि अन्हवावहीं ।सीताराम बिमल यश बहु सखि गावहीं ॥ सबिधि सखिन अन्हवाइ राम

अरु जानकी। अंग अंग सखि अँगोछहिं पीतम प्रानकी ॥ ५२ ॥

॥ श्लोक ॥

संतप्तकांचनंप्रख्यंपीताम्बर मिदंहरे ॥
संगृहाणजगन्नाथ रामचन्द्रनमोस्तुते ॥

अंग अँगोछिकै धोती पीत चुनावहीं ॥ ढिग जराव सुन्दर रामहिं पहिरावहीं ॥ ५४ ॥

॥ श्लोक ॥

श्रीरामाच्युतयज्ञेश श्रीधरानन्तराघ
वः।ब्रह्मसूत्रंसोतरीयंगृहाणरघुनायकः॥

सुगन्धा छन्द ॥

यज्ञोपवीत पीत अति तड़ित लजावन।पहिरावहिं सखि रामचरण मन भावन ॥ ५६ ॥

॥श्लोक॥

शाठीसुसुक्ष्मतरतातिनीलासौवर्ण सूत्रकलिताकृपयाब्रताते ॥ भर्तुःस्वरूप मनुभावयतांजनानां प्रीत्यैकरोखिपर देवियदापिधानम् ॥ ५७ ॥

सुगन्धा छन्द ॥

सारी नील जानकिहि सखि पहिरावहीं। कनक-फूल मणि कान ढिग जरित सुहावहीं ॥ चंदन केसरि मृगमद अगर कपूरदई । लेपन करहिं रामसिय तन मन रुचिलई ॥ ५८

हरिगीत छन्द ॥

पहिराइ सारी नील गोरि शरीर पर छबि

लखतकी। जनु नीलघन तन बाल रबि दामिनि अथाई नखतकी ॥कहिजातनाहिं शोभाभरी श्री रामकटि धोतीलसै॥शिशुहंस जनु निज कन्यका के गोद युत मंडल बसैं । सियचरण अँगुरि नख अवलि बिछिया कनक मणि बूटकी ॥ जनु अरुण पीत कमल दलन मुक्तावलि बीर बहूट की। श्रीरामपग अंगुलि नख शोभा मनोहरता सजै ॥ जनु नील पीतारुण जलदल परम कजमा लसै ॥ ५८ ॥

सुगंधा छन्द ॥

कोइ जल कनक मेहावर दइ पग पीय के। जनु मरकत मणि पत्र लिखति यश सीय के ॥ जनकलली पद जावक चित्र लोलदइ। कनक

पत्र जनु लिखति राममन मोललई ॥ सियपग पीठ धवलमणि एक ढिगन कनु। बाल हंससब कंज कोश वोड़ी जनु ॥ त्रिवलि नूपुर सियपग रतन कनक कर। मनहुँ बिचित्र भ्रमर अलि लाल कमल पर ॥ नूपुरतीन अवलि पगराम सोनकर। मनहुँ पराग भरे अलि नीलकमल पर ॥ सिय नूपुर तर गुंज कनक डुइलर बर नूपुरपर पैंजनी बनी शोभाघर ॥ नूपुर ऊपरगोड़-हरा जानकी पीय के। जातरूप मणि चुनित चुनित तस सीय के ॥ पग शृंगार करैं चतुरी श्यामा सखी। कोइ कहै जेहि बसभयो रामरामा लखी ॥ सियकोछीलरसात पांचत्रैएकहीं॥ स्वर्ण खोलभरि मोति जड़ाव लरन गुहीजानकि कटि

जगमागित नीलपट पर छई । मनहुँ सतपरिरिख नारि बलाहक पर उई ॥ रामचन्द्र कटि घेरतीनि लर किंकिणी । नील शृँग मध्यप्रात सुरुज जनु दामिनी । जानकि कटिमंडल त्रयकिंकिणि घनि गुही ॥ मनहुँ शुक्रकी माल सूत्रदामिनि पुही । किंकिणि पर कटि सूत्र उभय शोभा असि ॥ कनकतमाल लतातरु दामिनि जालसी । ललिय लाल कटि सूत्र युगल सखि रचि भरी । रामचरण शृँगार छबि जनु मेखल करी ॥ ६० ॥

॥ श्लोक ॥

हेमाभिवर्द्धितविभूषणभूषितंते त्रैलोक्यतेजइवमंजुल पुंजभूतं भाविरिम

सुंदारिपदंसरसीरुहाभं भीताभयप्रदम नंतमनोभिधेयम् ॥ नीलाम्भकंचुक मंणिन्द्रसमूह निष्कैर्वक्षोजयुग्ममतितुं गमलंकृतन्ते हारैर्मनोहरतरैस्तरुणीक्षि तीजे सौंदर्य्यबारिनिधिबारितरंगसंगम्

सुभगीतछन्द ॥

हँसुलीसिय सुग्रीव कलि पंचलरी चंपकलीवरी। चौकोनपदिक हृदय उपर सतलरनपोहित श्री जरी ॥ नाभी तरे शितहारलघु मोतिन गुहे चल हलहलो॥ षोड़शकला द्वौपक्षक्रमतेचंद्रहार सुधार लो । सोरहसुरंग माणि सोह अतिकांछी तरे पूरण कलो ॥ श्रीजानकीहियहिराय सखिमाणि जारि

सारि किनारिलो ॥ शोभाअभूति न जातिकहि सखि सीयतन भूषण कसी ॥ संगम सरस्वति जमुनबिच जनु रबि तड़ित शशिआनिफँसी ६२ ॥

॥ श्लोक ॥

किरीटहारकेयूररत्नमेखला ग्रैवेय कौस्तुभोहाररत्नकंकणनूपुर एवमादीनिसर्वाणिभूषणानिनृपोत्तम ॥ अर्हंदास्यामिसद्भक्त्यासंगृहाणजनार्दन ६३ ॥

सुभगीतछन्द॥

श्रीरामजूके कंठकंठा लसत अतिशयगजमनी। त्रैकोण कौस्तुभ उरलसै रबि कोटि शशिद्युति सो घनी॥ कौस्तुभ तरे बर गुंज कंचन माणिन

कनिन अद्भुत बनी ॥ उद्योत रबि शतकोटि हृद
पर पदिक शोभाभनी । नाभीतरे बरमाल मोहन
कनक बिद्रुम लालगे ॥ बैजंति माला किंकिणी
तरलगि रतन पचरँग जगे । श्रीकृष्णनीलारुण
धवलपीतापिढौलर जग मगे ॥ शृंगारकृत बन-
माल रबि सखि ग्रीवते अरु पगलगे। कंचनधौत
इव कल सुमन षट कलित जरावन गुहितजे ॥
नव नील घन नखतह्न नव ग्रह तड़ित शशि रबि
बहुलजे ॥ ६४ ॥

सुभगीत छन्द

कोइ सखि सिय भ्रूमध्य सुभग सेंदुर करै
मनहुँ अमल शशि शिखर दिब्य दीपक बरै ६५

॥ श्लोक ॥

मलयाचलसम्भूत० ॥

राम भाल तिलकोर्द्ध गोरोचन रेख दुइ।
पीत मनहुँ घन शिखर तड़ित जग मग छुइ ॥
कोइ सखि सियकच झारहिं रुचिर मांग गुहि।
शीश श्रवण लगि मध्य मिलित मोती पुही ॥
टीका सिय जूके भाल श्रवण लगि परठटी।
पट्टाकार कनक धवरत्न कनिन जटी ॥ टीका
परचन्द्रिका राम दिशि झुकिरह्यो। रवि शशि
बहु त्रिभुवन उपमा कछु नहिं लह्यो ॥ सप्तशृंग
यक मध्य किरीट रामशिर। मणि जटित रवि
कोटि चन्द खलि नहिं थिर ॥ राम अलक घुँघुरारि

कपोलन लगि लसै । मनहुँ लुब्ध अलि कमल भोर पीवत रसै ॥ सिय सेंदुर टीका भाल बेंदी बनु । कनक श्रृंगपर केतु दुइज शशि शुक्रजनु॥ बेंदी बनी अनूप श्रवणताटंकनु । जनु शशि हृदय द्वौकूल कमठ शिशु कंचनु ॥ राम श्रवण कुण्डल मकराकृत लोलजू । जनु तमाल तरु झूलत मयन हिंडोलजू ॥ कोटिन रबि पर तेज कोटि। शीतल शशि । जनक लली कीबोर तेज शीतलतासि॥अति सुन्दर सियके अम्बककाजल बनो । अरुण कंजके कोषश्याम रेखा मनों ॥ काजल देहिं सखी दुइ लोचन श्यामके। जेहि विधि जनकललीके तेहि बिधि रामके॥सीतामुख अधरारुणपर बेसरिहलै । जनु मयंक सुत अरुण

कंजदलन पर चलै ॥ राम बुलाक मनोहर चिबुक बिन्दुकई । पीत सकल छबि छेकि छापजनु करिदई ॥ नील बिन्दु सीताजूके चिबुक सखी करी । बशीकरण जनु यन्त्र राम चितहित धरी ॥ पहुँची बलयबहूटा मणि कनक जरावहिं । सीता भुज द्वौमूल सखी पहिरावहिं ॥ राम भुजन बाजू बलय मुनि मन मोहिका । खडुवा पहुँची कंकन मणिन मुद्रिका ॥ सिय पछुवा चूरी कंकण मुँदरी छल्ला । बंक आदि बहु भूषण कनक मणिन कला ॥ पीताम्बर मणि कनक छोर मोतिनछजै । शरद प्रातरबि तड़ित तप्त कंचन लजै ॥ ललिय लाल के भूषण अगिणित को कहि । रामचरण सखि जानहिं जो लखि छकिरहिं ॥ ६६ ॥

हरिगीतछंद ॥

सब बिधि सखिन शृंगार भूषण साजि सीता राम के । रतिकाम कोटिन लजहिं लखि पटतरौं केहि छबिधाम के ॥ उपमा न कहुँ सियराम सम सियराम सम सियरामहीं । बैठे सिंहासन दिव्य सब सखि लगीं निज निज कामहीं ६७ ॥

॥ श्लोक ॥

रत्नसिंहासनंतुभ्यं दास्यामिस्वी कुरुप्रभो ॥ श्रीरामागच्छभगवन् रघु वीरनृपोत्तम ॥ जानक्यासहराजेन्द्र सु स्थिरोभवसर्वदा ॥ रामचन्द्रमहेष्वास रावणांतकराघव ॥ तुलसीकुंदमन्दार

जातीपुन्नागचंपकैः ॥ कदम्बकरवीरैश्च कुशुमैःशतपत्रकैः।नीलांबुजैर्बिल्वदलैः पुष्पमाल्यैश्चराघव ॥ पूजयिष्याम्यहं भक्त्या संगृहाणजनार्दन ॥६८॥

सुगंधा छन्द ॥

कोइ सखि तुलसी सुमनमाल रचिल्यावहीं। सिंहासन बैठाय हार पहिरावहीं ॥ कोइ सखि दर्पन दीरघ देखावहिं दंपति । लखि प्रसन्न सियराम सखिन की मतिगति ॥ धूपदीप प्रथमहिं कहिआये करिदीप मुखपोंछि रामसिय मन लई। रामचरण सखि बालभोग बहुरुचिदई ६९॥

॥ श्लोक ॥

इदंदिव्यानममृतंरसैःषड्भिःसमन्वितम् ॥ श्रीरामरामराजेन्द्र नैवेद्यंप्रतिगृह्यताम् ॥ ७० ॥

चौबोला छंद ॥

रतन कटोरन बालभोग भरि बहुप्रकार सखि ल्याई जू। रामलला अरु जनकनन्दनी पावत रुचि अधिकाई जू ॥ कामधेनु कोउ दूध अधावट आधी चीनि मिलाई जू। पुवा सोहारी गोझादिक बहु को पक्वान गनाई जू ॥ सरयू जल सखि पान कराई समय समय रुखपाईजू। कोइ सखि मधुर राम गुण गावहिं कोइ रुचि पवन

डोलाई जू॥ मोदक सेव जलेबी पेड़ा बुंदियापाग सोहाई जू। लाचीदान बतासा खुरमा खाझादिक बहुभाई जू॥ आम बदाम चिरौंजी केरा दाख अँगूर सिवाईजू। कटहर गरीछोहारादिकबहु मेवा चूरमिलाई जू॥ रुचिसों पावत रामजानकी पुनि जल सखिन पिवाई जू। कोइ सखिजानकि अग्रभोग लै हँसिरघुबरहिं खवाई जू॥ रसबिलास युत कोइ सखि बोलति ऐसो स्वाद कहँ पाई जू॥ बिहँशत राम हँसत भै सखि सबसों सुख बरणिन जाई जू ७१॥

॥ श्लोक॥

करपूरवासितां दिव्यं सुवर्णकलसे स्थितम्॥ गृहाणाचमनं दिव्यं जानक्या

रघुनन्दन ॥ शीतवातोष्मसंत्राण पर लज्यानिवारणम् ॥ सुवेषधारितंयस्मात वासोयंप्रतिगृह्यताम् ॥ ७२ ॥

चौबोला छंद ॥

पुनि दुइसखि आचमन कराय मुख त्रैबार धुवाई जू । बहुरि सखिन सिय रामलालको चंद्र बदन अँगुछाई जू ॥ ७३ ॥

॥ श्लोक ॥

नागवल्लीदलंदिव्यंपुंगीफलसमन्वितम् ॥ ताम्बूलंगृह्यतांराम कर्पूरादिसमन्वितम् ॥ ७४ ॥

चौबोला छंद ॥

पान खवाय आठ बाती रचि आरति दिव्य बनाई जू। कोइसखि रामपाणि शरधनुदै सियकर कमल सोहाई जू ॥ चारिबार पग दुइ कटि मुख यक सप्त सकल अँग भाई जू। रामचरण सखि करत आरती लखि सियराम लोभाई ॥ ७५ ॥

॥ श्लोक ॥

मंगलार्थम्॥आदौचतुष्पादतलेचदेया द्विनाभिदेशेमुखमंडलेकम् ॥ सर्बांगदेशेसुचिसप्तवारं सुरार्त्तिकाभक्तजनेन देया ॥ ७६ ॥

सवैयाछंद ॥ शृंगार आरती ॥

आरति करै रसप्रेमभरी सियरघुबर को शृंगार करी सखि । मणिमय थार सखिन कर राजित बाती रविशशि द्युति निदरी ॥ बाजहिं भेर निशान दुंदुभी शंखझांझ करतालधरी । नाचहिं गान करहिं सखि थेइ थेइ सुमनमाल मणि होत झरी ॥ रामचरण सियराम रूपलखिसखिआनँद रस सिंधु परी ॥७७॥

सोरठा ॥

आरति सखिन उतारि लखि किरीटतेनखनलौं ।
गान शृंगार सवांरि रामचरण गावहिं नचहिं ॥

रागकाफी ॥

देखो सखि राम जानकी जोरी । बिहँसनि

मृदुमुसकानि परस्पर चितवनिमें चित प्राणहरो
री ॥ रतन सिंहासन पर राजित द्वौ श्रीघनश्याम
तड़ित द्युतिकोरी। मणि भूषण राजित नखशिख
लौं उपमा कोटि काम रतिथोरी ॥ बहुसखि छत्र
ब्यजनचामरलिहे बहुसखिधनुशर बेतछरोरी। बहु
सखि बाजन बिबिधि बजावहिं बहु सखि नृत्यत
टकनटरोरी ॥ बहुसखिगानतरंगउठावहिं कुहु कुहु
थेइथेइ तानधरोरी। बहुसखि अँगतर अबीर उड़ा-
वहिं बहुसखि फूलन बृष्टि करोरी॥ बहु सखि जय
जयकारकरहिं कहि सदा अनन्द रहै यह जोरी।
रामच्चरण भोजन बहुब्यजन बहुसखि लिहे मणि
थार भरोरी ॥ ७९ ॥

॥ श्लोक ॥

ॐ नमोभगवते श्रीरामाय परमात्मने ॥ परात्परायरामायससीतायैनमोनमः ८० ॐनमोभगवतेश्रीरघुनाथाय शांर्गिणेचिन्प्रयानंदरूपायस सीतायैनमोनमः८१ ॐनमोभगवतेश्रीरामकृष्णायचक्रिणे॥ विशुद्धज्ञानदेहायससीतायैनमोनमः ८२ ॐनमोभगवतेश्रीवासुदेवायविष्णवे॥ पूर्णानंदैकरूपायससीतायैनमोनमः ८३ ॐनमोभगवते श्रीरामभद्रायवेधसे॥सर्वलोकशरणायस सीतायैनमोनमः ८४ ॐ नमोभगवतेश्री

रामायामिततेजसे॥ ब्रह्मानन्दैकरूपाय ससीतायै नमोनमः ॥ ८५ ॥

चंचरीक छन्द॥

जय जय रघुनन्दन जय जनक की दुलारी। सकल विश्व पोषणभर करुणाकर आरत हर दीन के दयाल पतित पावन अघहारी॥ अति उदार वेदपार अघेउ नाम कहि तुम्हार होत जगत पारलेत नाथ निज निहारी। अगुन सगुन प्रेरक निगमागम जन हेरक प्रभु आतम परमातम पर राम बपु तुम्हारी॥सताचित आनन्द रूप नख शिखलों छबिअनूप कोटिकोटि छबिअनंगअंगन प्रति बारी॥ श्री भू लीला सुदेवि संभव सिय

चरण सेवि सीता रुखपाय बिबिधि लीला विस्ता-
री ॥ गिरजा ब्रह्माणी कमलासपतिनयानी करि
संपुट सिय भू निहारि भव थिति लयकारी । सीता
मन राखत श्रीरामचन्द नयनन पर जाकी बिनु
कृपा रामदुर्ल्लभयुगचारी । रामचरण शोभा श्रृँगार
छबि अनूप रूप अंगनि प्रति कोटिन रति वारि
फेरि डारी ॥ ८६ ॥

दोहा ॥

दृष्टिभोगपुनि करिसखिन सहितबिमानअसीन ।
सीयराम चले सरयुतट हरषि दरश सबकीन ८७

चौपाई छंद ॥

कभुमंगल आरति करि पाछे । सखिन सहित

सरयूतट गाछे ।। सखियन लखि रघुबर मनआसा।
तस कृत केलि सखाहोइदासा ।।तेसबकोटिन राम
अंगबर । सब कुमार नखशिख शोभा घर ।।८८।।

॥ श्लोक ॥

अनन्तासखिरामाग्रे शुश्रूषानिपुना
ह्युतम् ॥ रामआज्ञानुकूलेन सखादा
सोसभावनात् ॥ ८९ ॥

चौपाई ॥

कनक मणिन जटि नाव अपारा ।
सखन सहित प्रभु खेल नवारा ॥ कोटिन सखि
सिय संग कुमारी। खेलहिं नावन चढ़ी नवारी॥
जलविहार बहु करि मनभाई । द्वौ दिशि सरयू

लगे नहाई ॥ जलक्रीड़ा करि सखन सहीता। सखिन सहित क्रीड़ाकरिसीता॥न्हाइन्हाइ भूषण सिंगार त्योंइ। धूपदीप नैवेद्य सबविधि दइ १०॥

दोहा ॥

सरयूतट आरतिकरि देखन जाहिं अराम।
सखादासनिजरूपसोइ जाहिं संगसखिधाम ११।

चौपाई ॥

जेहि सखि कुंज राम सिय जाहीं। तहँ तहँ पूजन सखिय कराहीं॥ जानकि रसिक जानकी संगे। बन बिहरहिं कभु कुंजनरंगे ॥ बिहरत सुख जानकीबिहारी। समय भयो जेवनार तयारी ॥ भा जेवनार जोरि कर यक अलि।

कहाति दिब्य रस रासिक राम चलि ॥ सुनि सखि बचन चले सिय रामा । संग सखी बहु गये सो धामा ॥ कनक मणिन पीढ़ा दुइ रूरे। तापरबैठि राम सिय जूरे ॥ मुख्य सखी सँग शशि मण्डल जहँ। भूषण कछु उतारि बैठे तहँ ॥ सखि सोइ भांति सखा बैठे बहु । सो शोभा सुख आनँद को कहु ॥ १२ ॥

दोहा ॥

पनवारा परे दिब्य बहु सखिसन्मुख सब सोह ।
रामचरण सखि परूसहिं चारिछरसपरजोह १३ ॥

हरि प्रियाछन्द ॥ जेवनार बिधि ॥

सखि चरण प्रक्षालिकै मुख धोवाइ अँगुछाइ

जू। करि धूप दीप बिधि सीय राम रुखपाइजू॥ भोजन सखियन रचि मणि थार भरिल्याइजू। परूसनलागीं बहु मंगल गान सुहाइजू॥ करि पंच कवल दुइ सखि जलपान कराइजू। जेंवत सिय रघुबर स्वाद कि करत बड़ाइजू॥ ओदन बहु भांति के पहिति अनेक बनाइजू। फुलका घृत बोरी अवर भिन्न करि पाइजू॥ बुँदिया रिकवचबर ब्यंजन को कबि गाइजू। भांटाकटहर दै तरकारी अति भाइजू॥ बहुशाक बनाइ बहु प्रकार रुचिदाइजू। जलसखिन पिआई जबहिं लाल मन भाइजू॥ दधि दुइबिधि ल्याइ मिसिरी एक मिलाइ जू। यक ऐसहि परूसहिं ललिय लाल मन भाइजू॥ दधि परुसत सखि एक सखा

कपोल लगाइजू । प्रभु हँसतभये सब जनकलली मुसकाइजू ॥ पुनि दूध अधावट तीनि प्रकार बनाइजू। एक कंन्दमिलाइ एकमें चीनी सोहाइ जू ॥ एकऐसेहि पावहिं जब जैसिहि रुचिआइ जू । पुनि पुवा सोहारी को पकवान गनाइजू ॥ मोदक सु जलेबी पेड़ा आदि मिठाइजू । अंकुर कन्दादि सांधन बरणि नहिं जाइजू ॥ अतिरुचि सों पावत पुनि जल साखिन पियाइजू। अमरा आमादिक बिबिधि अचार सोहाइजू॥पावत पिय प्यारी परुसहिं सखि गारि गाइजू॥रानी कौशल्या सोकि रसोइ बनाइजू ॥ केकै सुमित्रा धामदेखि कुम्हिलइ जू। भोजन यहिभांति के कहहु लाल कहँपाइजू ॥ प्रभुबिहंसिउठे साखि शुचि आचमन

कराइजू। त्रैवार धोइ मुख खरिका कनक कराइ जू। जल दै प्रक्षालि पुनि पानि बदन अँगुछाइ जू॥ सखि पानखवाई रुचि सुगन्ध बहुडाइजू। करै दिब्य आरती रामचरण सखिगाइजू॥९४॥

सवैयाछंद। राजभोगआरती॥

आरति करै सियरामकी लखि मूरति मोद निधानकी। मणि चौकी राजित सिय रघुबरनख शिख शोभा धामकी॥वारौं मैं सीयराम छबि ऊपर कोटिन रबि कामकी। पान खात अधरारद शोभित निंदत बहु द्युति दामकी॥रामचरण सखि सुमन सेज रचि लाड़िललाल अरामकी ९५॥

रूप चौपाई॥

आरति करि अँगोछि मुख जोई। पुनि दइ

पीकदान सखि दोई ॥ पान आरती पहुँचे सब कहु। पुनि दंडवत करहिं अस्तुति बहु ॥ सीय रामकै आयसुपाई। गइ कुंजन निज रूपसोहाई॥ दिब्य पलँग रचि सुमन बनाई। ललियलाल बिश्राम कराई ॥ १६ ॥

हरिप्रिया छन्द ॥

सखिचरणपलोटहिं कोइ रुचि पवन डोलाइजू।
कोइ पीकदान धरि कोइ सखि जलभरि ल्याइजू॥
कोइ सखि स्वरझीने सीयराम गुण गाइजू। सखि
रामचरण यहि भांति नींद सुख आइजू॥ १७॥

दोहा ॥

त्रिबिधि पवन चलु कोकिला बोलहिं कीरमयूर।

करस्वर सखिय बजाव बहु मधुर मधुर स्वरपूर ॥
सुखयुतकीन्ह अराम प्रभु जागन समय निहारि ।
रामचरण सखि ठाढ़ि होइ समय सुराग उचारि ॥

सवैया छन्द ॥

जागिये सियराम पियारे ॥ सखि जल बसन असन सुपास लिहे जो चाही सोइ माँगिये । पवन करहिं मधुरे स्वर गावहिं पिय प्यारी रस पागिये ॥ प्रेम सहित सखि अरज करति हैं पिय आलस को त्यागिये । जागे रामचरण करुणा-निधि निज निज कृत सखि लागिये ॥ ९९ ॥

सुगन्धा छन्द ॥

उठि बैठे सियराम पलँग पर राजहीं । सोछबि

कहत शेष शिवबिधि श्रुति लाजहीं ॥ लघुचौकी बसुकोन चारिं मणिपगतर सखिदै जल प्रक्षालि कर बदन नयनबर ॥ पुनि मुख कमल अँगोछि कै धूप दीप कई। मोदक फल बहु स्वाद सखिन भोजन दई ॥ मन भावत कछु पाइ आचमन पुनिलई। मुख अँगोछि सखि पान सुगन्धन मय दई ॥ १०० ॥

रूप सवैया छन्द ॥

करै आरति सीतारामकी निरखहिं छबि शोभा धामकी ॥ बाजहिं मधुर मधुर बाजन बहु गावहिं कोकिल कामकी। बरखहिं सुमनमाल बहु रंगन करहिं मधुर धुनि नामकी ॥ कोटि काम रति निंदत सो छबि देखहिं श्यामा श्यामकी।

रामचरण सखि आरति करि मुख पोंछि पानदे दामकी १०१॥

दोहा॥

पुनि सियराम बिचित्र बन गये सखी बहुसंग।
प्रभुहि पूजिबिधि द्रुमलता भ्रमर मृगादिबिहंग॥

चौपाई॥

पुनि प्रभु गे शृंगारबन माहीं। नखशिख भूषण सुमन कराहीं॥ पुनि प्रमोदबन गे सुखशीला। कीन्ह बिबिधिबिधि राहस लीला। पुनि अहलाद बिपिनि कहँ जाई। सरयू तट विहरत मनभाई॥ देखहिं बिटप लतातृण रहे फबि। बिबिधिभांति फल फूल परण छबि॥

कतहुँ बैठि तरुतर सुखपाई । देखहिं मृग खग मुखर नचाई ॥ कन्दांकुर फल बहु रुचि आये। सखिन सहित सियपिय रुचि पाये ॥ जानकि घाट जाइ जलपाई । कीन्ह केलि बहुचलि फुलवाई ॥ देखि सपरम रम्य आरामा । पुनि मनभयो चलिय सो धामा ॥ १०३ ॥

सोरठा ॥

भूरि सुखासन आय चले राम चढ़ि संग सब ।
मनइव चलत सोहाइ चमरछत्र व्यजनादिछबि॥

राग गौरी ॥

आवत रासबिहारी देखो सखि । सरयूतीर शृँगार विपिन ते अति अनूप छबि न्यारी ॥

सीताराम मनोहर जोरी चितवनकी बलिहारी। कुंडल अलक हलक बुलाककी दलकत हृदय हमारी॥ संग सखी सोहैं अलबेली बनी ठनी छबिकारी। सुमन सिंगार किये नखशिख लौं निजकर श्याम सँवारी॥ प्रभु आगे सखि खेलतआवैं फूलन गेंद उछारी। झुकि झुकि लेत परस्पर फेकहिं लखि अनन्द पिय प्यारी॥ आये दम्पति रामचरण सखि सुमन सिंगार उतारी। नखशिखमणिभूषणसिंगारकरिसिंहासनबैठारी॥

राजित सिय रघुबीर सिंहासन। कोटिन भानु प्रकास सिंहासन कोटिन शशि समसीर। कोटि कामरति द्युति निन्दत द्वौ श्यामल गोर शरीर॥ मणि बहुभाति विभूषण शोभित पीत नीलबर

चीर ॥ बहु सखि धूप की युक्ति बनावहिं बहु सखि दीप सजीर। बहुसखि रचि नैवेद्य बनावहिं बहुसखि लीन्हे नीर ॥ बहुसखि मुख मज्जन पट लीन्हे बहुसखि लीन्हे बीर । बहु सखि छत्र व्यजनचामरलीन्हेबहुसखि करतसमीर।।बहुसखि बाजन ।बिबिधि बजावहिं तालदेहिं बहुधीर। राम चरणसखि गौरी गावहिं मधुरेस्वर गंभीर १०६ ॥

दोहा ॥

मुखधोवाइ अँगुछाइ सखि दीन्ह पान मुखरंग ।
रामचन्द्र कर बाणधनु दीन्हसीयकर कंज १०७

रूपसवैयाछन्द । आरती ॥

प्रथम चरण तल पुनि नख जावक नूपुर बारह बानकी । सखि आरति करैं प्रियप्राणकी निर-

खहिंछबि रामसुजानकी ॥ पुनि किंकिणि कटि सूत्र मनोहर बहुरि अधर चष पानकी । दम्पति मुख सखि शशि चकोर थँभि पुनि सर्वांग प्रनान की ॥ पुनि किरीट चंद्रिका निरखि पुनि राम-चरण सखिपानकी । अंगअंग छबि सुधापान करि रामलाल अरु जानकी ॥ १०८ ॥

दोहा ॥

आरति करि मुखपोंछिसखि पीकदान पुनिदीन ।
रामचरण सबसाजसाजि नृत्य गानकरिलीन १०९

रागकाफी ॥

अलि छबिदेखु किशोर किशोरी । रघुनन्दन अरु जनकनन्दनी तरु शृंगार युगरूप फरोरी ॥

कोकि कण्ठ द्युति श्याम रामतन कञ्चन धौत जानकी गोरी। रामचन्द्र कर शर धनु राजत सिय कर कमल गेंद छबिछोरी ॥ रामचन्द्र कटिकांध पिताम्बर सारी नील सीय तन मोरी। मनहुँ रामसारी होइ सिय तन सिय पट पीत रामतन कोरी॥को छबि कहै बिभूषण भूषित को अस जो लखि मन न हरोरी। युगल मनोहर अंग अंग प्रति वारों छबि रति कामकरोरी॥ बहुसखि निकट ठाढ़िसेवा बहु नृत्य तान स्वरगान भरोरी॥ राम चरण सनकादि शेष शुक शिव हनुमत मत यहै धरोरी॥ ११० ॥

दोहा ॥

नृत्यगानकरि बिबिधिबिधि सखिसिय रामरिझाइ

रामसीय रुखपाय पुनि बिबिधि बियारी आइ ॥
पीकदान दै दुइसखी पुनि आचमन कराइ ।
पट दै धूपदीप करि पुनि भोजन अरपाइ १११ ॥

चौबोला छंद ॥

कनकथार बहुभारि पकवानन सखि कर कमल सोहाई जू । करत बियारी राम जानकी परसहिं सखिरुचि दाई जू ॥ पंच कवर करि जल पियाइ पुनि पावत सिय रघुराई जू । बहु प्रकार भाजी तरकारी दूधसों रुचि मधुराई जू ॥ भांति भांति बहुबनी मिठाई गरमि गरमि मनभाई जू । बि-बिधि अचार सुरस मन रोचक बिच बिच भात पवाई जू ॥ मोहन भोग बनाइ भांति बहु मेवा चूर मिलाई जू । पावत करहिं हासरस बहुसखि

रस मैं बचन सुनाई जू ॥ रामलला तुम सिय जु
के चेरे कहि जल सखिन पियाई जू । सो अनन्द
सुख जानै सोसखि रामचरण किमिगाई जू ११२

राग बिहाग ॥

करत बियारी प्यारी पीतम । बहु सखि सखा
संग बैठे सुख हास परस्पर कारी ॥ बहु सखि पवन
करहिं मनरोचक बहुसखि जल भरे झारी । बहु
सखि लिहे पकवान मिठाई भरे कंचनकी थारी ॥
परुसहिं सीयराम रुख लखि लखि बिबिधि
स्वाद रुचि कारी । कोइ सखि कहति अवर लीजै
कछु मैं बहुँभांति सँवारी ॥ मिलिदश पांचसखी
सिय जू की देहिं बिबिधि रसगारी । प्रभु मुसु-
काहिं बहुरि दुइसखि मिलि पान करायो बारी ॥

पुनि कछु पाय आचमन लीन्हें रघुबर जनक-दुलारी। रामचरण सखि पानखवाय भइ आरती तयारी॥ ११३॥

रूप सवैया छन्द॥

अति प्रेम मगन तनमन भीजै सखि आरति सैन सुरुचि कीजै। युगल चंद सबके सन्मुख नित चित चकोर भयो मदन रतीजै॥ सीताराम सुधा छबि निधि महँ चलतमीन इवचख लीजै। अंग अंग लखि रूपसार शशि नयन मँगन रह रह पीजै॥ बहु सखि ठाढ़ि साज सबसाजे बाजन ताल गान मधुरीजै। रामचरण सखि करत आरती मनक्रम बचन अर्पिदीजै ११४॥

दोहा ॥

करि आरती अगोंछि मुख पीकदान पुनि दीन।
अस्तुतिकरिदण्डवत्पुनि बचनकहतिरसलीन ॥

राग बिहाग ॥

सैन चलिय पिया मोरे रामसिय। सकल सखी मुखचंद बिलोकहिं रैनिगई बहु तोर॥ अलसाने लखि नयन उनींदे सहजा सखी निहोरि। ललिय लालसोवनार चलहु बलिसकल सखी करजोरि॥ सुनि सखि बचन उठे पिय प्यारी उतरि सिंहासन सोरे। सखियन रामसीय जु के भूषण हरशिर हँसि कछुछोरे॥ भूषण बसन उतारि राखि सखि सैन बिभषण थोरे। सयिराम

सोवनार चले सुख सखियन अति उमगोरे।मणि-
मय पलँग ढिगन मुक्तावलि सेजबंद कसि डोरे
रामचरण उछीर गेंडुआ पै फेनसेज पौढ़ेरे॥१५॥
सयनकियो पिय प्यारी सेज सुख। बिविधि रंग
मणि मय मंदिर मै जगमगात उजियारी॥
मदन मंजरी की आयसु सखि प्रथमहिं सेज
सँवारी। दिव्य सुगन्ध सुमन चहुँदिग रचि
बिविधि रंग फुलवारी॥ सीताराम अराम कीन
सखि ठाढ़ि नीर भरे झारी। चतुर सखी पदपदु
पलोटहिं राहस बात उचारी॥ बीरा पीकदान
सखिलीन्हे सयनभोग भरे थारी। बाजन पंच
बजाव पंच सखि सप्त स्वरन रसकारी। आइ
नींद सुख सोइरहे रघुनन्दन जनक दुलारी॥

मिचरण सखि बहुचौकी रहि बहु निज महल
पधारी ॥ ११६ ॥

दोहा ॥

यह सेवा श्रीजानकी श्रीरामप्रसादहि दीन।
महाराज प्रिय पौत्रलखि मोहिं कृपा कछुकीन॥
जाहि आश्रय तेमिलेउ मोहिं तेहिं आयसुतेकीन।
प्रगट बोध ताते भयो राम जानकी दीन॥
मन क्रम बचन लगाय जिय अस सेवा करुजोइ।
हताराम प्रसन्न तेहि लहै परम सुख सोइ॥
सुरति प्रेम लगाइ करि लोक रीति सब कोइ।
रामचरण सोइ रस लहै शतगुर बिना न कोइ॥
सखी सखा अरुदास जो भाव बिना नहिं होइ।
तीनो को अधिकार यह भाव भाव भयसोइ॥

हनूमान शिव शेषदै तीनौं धर्म कराहिं। चाह
जेहि स्थान जस तस तैसे होइजाहि॥ ग्रन्थभा
रागापरम रामचरण भणि दीन। रामउपासक जे
रसिक समुझिहोहिं ते लीन॥ ११७॥

इतिश्री सेवाविधि संपूर्णम् शुभमस्तु सम्बत् १९५७
मिती कार्तिक बदी ४॥

Printed at The Lucknow Printing Press 1901.